॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥चतुर्थः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्राय राजन्यम्। मरुद्भ्यो वैश्यम्। तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय पुꣳश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय मागधम्॥१॥

गीताय सूतम्। नृत्ताय शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्माय रेभम्। नरिष्ठाये भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दाय स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय तक्षाणम्॥२॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्। शुभे वपम्। शरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय

श्व॒नितम्॑॥ ३॥

स॒न्धये॑ जा॒रम्। गे॒हायो॑पप॒तिम्। निर्ऋ॑त्यै परिवि॒त्तम्। आर्त्यै॑ परिविविदा॒नम्। अरा॑ध्यै दिधिषू॒पतिम्॑। प॒वित्रा॑य भि॒षजम्॑। प्र॒ज्ञाना॑य नक्षत्रद॒र्शम्। निष्कृ॑त्यै पेशस्का॒रीम्। बला॑योप॒दाम्। वर्णा॑यानू॒रुधम्॑॥ ४॥

न॒दीभ्य॑ः पौञ्जि॒ष्टम्। ऋ॒क्षीका॑भ्यो॒ नैषा॑दम्। पु॒रु॒ष॒व्या॒घ्राय॑ दु॒र्मदम्॑। प्र॒युद्भ्य॒ उन्म॑त्तम्। ग॒न्ध॒र्वा॒प्स॒राभ्यो॒ व्रात्यम्॑। स॒र्प॒दे॒व॒ज॒नेभ्योऽप्र॑तिपदम्। अवे॑भ्यः कित॒वम्। इ॒र्यता॑या॒ अकि॑तवम्। पि॒शा॒चेभ्यो॑ बिदलका॒रम्। या॒तु॒धाने॑भ्यः कण्टकका॒रम्॥ ५॥

उ॒त्सा॒देभ्य॑ः कु॒ब्जम्। प्र॒मुदे॑ वाम॒नम्। द्वा॒र्भ्यः स्ना॒मम्। स्वप्ना॑या॒न्धम्। अध॑र्माय बधि॒रम्। स॒ंज्ञाना॑य स्मरका॒रीम्। प्र॒का॒मोद्या॑योप॒सदम्॑। आ॒शि॒क्षायै॑ प्र॒श्निनम्॑। उ॒प॒शि॑क्षाया॑ अभिप्र॒श्निनम्॑। म॒र्यादा॑यै प्रश्नविवा॒कम्॥ ६॥

ऋत्यै॑ स्ते॒नहृ॑दयम्। वैर॑हत्याय॒ पिशु॑नम्। विवि॑त्त्यै क्ष॒त्तारम्॑।

औपद्रष्टाय सङ्ग्रहीतारम्। बलायानुचरम्। भूम्ने परिष्कन्दम्। प्रियाय प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेधाय वासः पल्पूलीम्। प्रकामाय रजयित्रीम्॥७॥

भायै दार्वाहारम्। प्रभाया आग्नेन्धम्। नाकस्य पृष्ठायाभिषेक्तारम्। ब्रध्नस्य विष्टपाय पात्रनिर्णेगम्। देवलोकाय पेशितारम्। मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्। सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारम्। अवत्यै वधायोपमन्थितारम्। सुवर्गाय लोकाय भागदुघम्। वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्॥८॥

अर्मेभ्यो हस्तिपम्। जवायाश्वपम्। पुष्ट्यै गोपालम्। तेजसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्। कीलालाय सुराकारम्। भद्राय गृहपम्। श्रेयसे वित्तधम्। अध्यक्षायानुक्षत्तारम्॥९॥

मन्यवेऽयस्तापम्। क्रोधाय निसरम्। शोकायाभिसरम्। उत्कूलविकूलाभ्यात्रिस्थिनम्। योगाय योक्तारम्। क्षेमाय

विमो॒क्तारम्॑। वपु॑षे मानस्कृ॒तम्। शीला॑याञ्जनीका॒रम्। निर्ऋ॑त्यै कोशका॒रीम्। य॒माया॒सूम्॥१०॥

य॒म्यै॑ यम॒सूम्। अथ॑र्व॒भ्योऽव॑तोकाम्। स॒व॒त्स॒राय॑ पर्या॒रिणी॑म्। प॒रि॒व॒त्स॒रायावि॑जाताम्। इ॒दा॒व॒त्स॒राया॑प॒स्कद्वरीम् इ॒द्व॒त्स॒राया॒तीत्व॑वरीम्। व॒त्स॒राय॒ विज॑र्जराम्। स॒व॒न्त्स॒राय॒ पलि॑क्नीम्। वना॑य वन॒पम्। अ॒न्यतो॑रण्याय दाव॒पम्॥११॥

सरो॑भ्यो धैव॒रम्। वेश॑न्ताभ्यो॒ दाशम्॑। उ॒प॒स्थाव॑रीभ्यो॒ बैन्दम्॑। न॒ड्व॒लाभ्यः॑ शौष्क॒लम्। पा॒र्याय कैव॒र्तम्। अ॒वा॒र्याय मार्गा॒रम्। ती॒र्थेभ्य॑ आ॒न्दम्। विष॑मेभ्यो मैना॒लम्। स्वने॑भ्यः॒ पर्ण॑कम्। गुहा॑भ्यः॒ किरा॑तम्। सानु॑भ्यो॒ जम्भ॑कम्। पर्व॑तेभ्यः॒ किम्पू॑रुषम्॥१२॥

प्र॒ति॒श्रुत्का॑या ऋतु॒लम्। घोषा॑य भ॒षम्। अन्ता॑य बहुवा॒दिनम्॑। अ॒न॒न्ताय॒ मूकम्॑। मह॑से वीणावा॒दम्। क्रोशा॑य तूणव॒ध्मम्। आ॒क्र॒न्दाय॑ दुन्दुभ्याघा॒तम्। अ॒व॒र॒स्प॒राय॑ शङ्ख॒ध्मम्। ऋ॒भुभ्यो॑जिनसन्धा॒यम्। सा॒ध्येभ्य॑श्चर्म॒म्णम्॥१३॥

बीभत्सायै पौल्कसम्। भूत्यै जागरणम्। अभूत्यै स्वपनम्। तुलायै वाणिजम्। वर्णाय हिरण्यकारम्। विश्वेभ्यो देवेभ्यः सिध्मलम्। पश्चाद्घोषाय ग्लावम्। ऋत्यै जनवादिनम्। व्युष्ट्या अपगल्भम्। सꣳशराय प्रच्छिदम्॥१४॥

हसाय पुꣳश्चलूमा लभते। वीणावादङ्गणकङ्गीताय। यादसे शाबुल्याम्। नर्माय भद्रवतीम्। तूणवध्मङ्गामण्यं पाणिसङ्घातनृत्ताय। मोदायानुक्रोशकम्। आनन्दाय तलवम्॥१५॥

अक्षराजाय कितवम्। कृताय सभाविनम्। त्रेताया आदिनवदर्शम्। द्वापराय बहिः सदम्। कलये सभास्थाणुम्। दुष्कृताय चरकाचार्यम्। अध्वने ब्रह्मचारिणम्। पिशाचेभ्यः सैलगम्। पिपासायै गोव्यच्छम्। निर्ऋत्यै गोघातम्। क्षुधे गोविकर्तम्। क्षुत्तृष्णाभ्यान्तम्। यो गां विकृन्तन्तं माꣳसं भिक्षमाण उपतिष्ठते॥१६॥

भूम्यै पीठसर्पिणमा लभते। अग्नयेऽꣳसलम्। वायवे

चाण्डा॒लम्। अ॒न्तरि॑क्षाय व॒ꣳशन॒र्तिनम्॑। दि॒वे ख॑ल॒तिम्। सूर्या॑य हर्य॒क्षम्। च॒न्द्रम॑से मिर्मि॒रम्। नक्ष॑त्रेभ्यः कि॒लासम्॑। अह्ने॑ शु॒क्लं पिङ्ग॒लम्। रात्रि॑यै कृ॒ष्णं पिङ्गा॒क्षम्॥१७॥

वा॒चे पुरु॑ष॒मा ल॑भते। प्रा॒णम॑पा॒नव्व्याँ॒नमु॑दा॒न॒ꣳ स॑मा॒नन्तान् वा॒यवे॑। सूर्या॑य॒ चक्षु॒रा ल॑भते। मन॑श्च॒न्द्रम॑से। दि॒ग्भ्यः श्रोत्रम्॑। प्र॒जाप॑तये॒ पुरु॑षम्॥१८॥

अथै॒तानरू॑पेभ्य॒ आल॑भते। अति॑ह्रस्व॒मति॑दीर्घम्। अति॑कृ॑श॒मत्य॑ꣳसलम्। अति॑शुक्ल॒मति॑कृष्णम्। अति॑श्लक्ष्ण॒-मति॑लोमशम्। अति॑किरिट॒मति॑दन्तुरम्। अति॑मिर्मिर॒मति॑मेमिष आ॒शायै॑ जा॒मिम्। प्र॒ती॒क्षायै॑ कुमा॒रीम्॥१९॥

ब्रह्म॑णे गी॒ताय॒ श्रम॑ाय स॒न्धये॑ न॒दीभ्य॑ उत्सा॒देभ्य॒ ऋत्यै॒ भाया॒ अर्मे॑भ्यो म॒न्यवे॑ य॒म्यै॑ दश॑दश॒ सरौ॑भ्यो॒ द्वाद॑श प्रति॒श्रुत्का॑यै बीभ॒त्साये॒ दश॑दश॒ हसा॑य स॒प्ताक्षरा॒जाय॒ त्रयो॑दश॒ भूम्यै॒ दश॑ वा॒चे षडथ॒ नवैका॒न्नवि॑ꣳशतिः॥१९॥

ब्रह्म॑णे य॒म्यै॑ नव॑दश॥१९॥

ब्रह्म॑णे कुमा॒रीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

This PDF was downloaded from http://stotrasamhita.github.io.
GitHub: http://stotrasamhita.github.io | http://github.com/stotrasamhita
Credits: http://stotrasamhita.github.io/about/